मुद्रा और साख

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» मुद्रा विनिमय का एक माध्यम

प्रश्न 1 (आसान). मुद्रा का मुख्य कार्य क्या है?
उत्तर – वस्तुओं और सेवाओं के विनिमय को आसान बनाना।

प्रश्न 2 (आसान). 'आवश्यकताओं का दोहरा संयोग' क्या है?
उत्तर – जब दोनों पक्ष एक-दूसरे से चीज़ें खरीदने और बेचने पर सहमत हों।

प्रश्न 3 (मध्यम). वस्तु विनिमय प्रणाली में क्या समस्याएँ थीं, जिन्हें मुद्रा ने हल किया?
उत्तर – मुख्य समस्या 'आवश्यकताओं का दोहरा संयोग' थी, जहाँ वस्तुओं का सीधा लेन-देन तभी संभव था जब दोनों पक्षों को एक-दूसरे की चीज़ों की ज़रूरत हो। मुद्रा ने इस ज़रूरत को खत्म कर दिया।

प्रश्न 4 (कठिन). आज के डिजिटल युग में, जब हम ऑनलाइन भुगतान करते हैं, तो क्या तब भी मुद्रा 'विनिमय का माध्यम' होती है? कैसे?
उत्तर – हाँ, बिल्कुल। भले ही हम भौतिक नोट या सिक्के नहीं छूते, पर ऑनलाइन भुगतान भी बैंक खातों में जमा 'मांग जमा' के रूप में मुद्रा का ही एक आधुनिक रूप है। यह भी वस्तुओं और सेवाओं के बदले भुगतान का एक तरीका है, यानी विनिमय का माध्यम ही है।

» मुद्रा के आधुनिक रूप: करेंसी

प्रश्न 5 (आसान). मुद्रा के आधुनिक रूप में कौन-कौन सी चीज़ें शामिल हैं?
उत्तर – कागज़ी नोट और सिक्के।

प्रश्न 6 (आसान). भारत में करेंसी नोट कौन जारी करता है?
उत्तर – भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) केंद्रीय सरकार की ओर से।

प्रश्न 7 (मध्यम). आधुनिक मुद्रा को विनिमय का माध्यम क्यों स्वीकार किया जाता है, जबकि उसकी अपनी कोई कीमत नहीं होती?
उत्तर – क्योंकि इसे देश की सरकार द्वारा प्राधिकृत किया जाता है और यह कानूनी रूप से वैध होती है, जिसे कोई अस्वीकार नहीं कर सकता।

प्रश्न 8 (कठिन). क्या भारत में कोई व्यक्ति कानूनी तौर पर रुपयों में अदायगी को अस्वीकार कर सकता है? क्यों?
उत्तर – नहीं, कोई व्यक्ति कानूनी तौर पर रुपयों में अदायगी को अस्वीकार नहीं कर सकता, क्योंकि भारतीय कानून विनिमय के माध्यम के रूप में रुपये का इस्तेमाल करने की वैधता प्रदान करता है और इसे सरकार द्वारा प्राधिकृत किया गया है।

» बैंकों में निक्षेप (माँग जमा)

प्रश्न 9 (आसान). बैंक में जमा की गई वह राशि जिसे माँगने पर निकाला जा सके, उसे क्या कहते हैं?
उत्तर – माँग जमा।

प्रश्न 10 (आसान). माँग जमा पर बैंक ग्राहकों को क्या देता है?
उत्तर – ब्याज।

प्रश्न 11 (मध्यम). अतिरिक्त नकदी को बैंक में जमा करने से हमें क्या दो मुख्य फायदे होते हैं?
उत्तर – सुरक्षा और ब्याज।

प्रश्न 12 (कठिन). माँग जमा को आधुनिक अर्थव्यवस्था में मुद्रा क्यों समझा जाता है?
उत्तर – क्योंकि इसे करेंसी के साथ-साथ व्यापक स्तर पर भुगतान का माध्यम स्वीकार किया जाता है और चेक द्वारा भुगतान की सुविधा भी मिलती है।

» चैक द्वारा भुगतान

प्रश्न 13 (आसान). चैक क्या है?
उत्तर – एक कागज़ जो बैंक को किसी खाते से दूसरे को पैसे देने का आदेश देता है।

प्रश्न 14 (आसान). चैक से भुगतान करने का एक फायदा बताओ।
उत्तर – नकद लेकर चलने की ज़रूरत नहीं होती।

प्रश्न 15 (मध्यम). अगर किसी को चैक से 5,000 रुपये देने हैं, तो 'Rupees' वाली जगह पर क्या लिखेंगे?
उत्तर – पांच हज़ार रुपये मात्र।

प्रश्न 16 (कठिन). चैक से भुगतान करते समय, भुगतान करने वाले के खाते में क्या बदलाव आता है और पैसे प्राप्त करने वाले के खाते में क्या बदलाव आता है?
उत्तर – भुगतान करने वाले के खाते में शेष घट जाता है, और पैसे प्राप्त करने वाले के खाते में शेष बढ़ जाता है।

» बैंकों की ऋण संबंधी गतिविधियाँ

प्रश्न 17 (आसान). बैंक जमाकर्ताओं से पैसा लेकर किसे देते हैं?
उत्तर – कर्जदारों को।

प्रश्न 18 (आसान). बैंक की आय का मुख्य स्रोत क्या है?
उत्तर – कर्जदारों से लिए गए ब्याज और जमाकर्ताओं को दिए गए ब्याज का अंतर।

प्रश्न 19 (मध्यम). अगर बैंक जमा पर 3% ब्याज दे और ऋण पर 8% ब्याज ले, तो ₹50,000 के ऋण से बैंक को कितनी कमाई होगी?
उत्तर – ₹2,500।

» साख की दो विभिन्न स्थितियाँ (ऋण के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव)

प्रश्न 20 (आसान). क्या ऋण हमेशा नुकसानदायक होता है?
उत्तर – नहीं, ऋण के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव हो सकते हैं।

प्रश्न 21 (आसान). सलीम के केस में ऋण का क्या प्रभाव रहा?
उत्तर – सकारात्मक प्रभाव, उसकी आय और उत्पादन बढ़ा।

प्रश्न 22 (मध्यम). स्वप्ना किस स्थिति का शिकार हुई? उसके साथ क्या हुआ?
उत्तर – स्वप्ना ऋण जाल का शिकार हुई। फसल खराब होने के कारण वह ऋण चुका नहीं पाई और उसे अपनी ज़मीन बेचनी पड़ी।

प्रश्न 23 (कठिन). ऋण कब किसी व्यक्ति के लिए ऋण जाल बन सकता है? कोई एक कारण बताओ।
उत्तर – ऋण तब ऋण जाल बन सकता है जब व्यक्ति उसे चुकाने की उम्मीद पर ऋण लेता है, लेकिन किसी अप्रत्याशित घटना (जैसे फसल खराब होना, बीमारी) के कारण कमाई नहीं कर पाता और ऋण चुकाना असंभव हो जाता है।

» ऋण की शर्तें

प्रश्न 24 (आसान). अगर आप अपने दोस्त से ₹50 उधार लेते हैं और कहते हैं कि ₹55 वापस करूँगा, तो ब्याज दर क्या हुई?
उत्तर – ₹5 का ब्याज हुआ।

प्रश्न 25 (आसान). एक किसान ने फसल उगाने के लिए महाजन से कर्ज़ लिया और अपनी ज़मीन के कागज़ात गिरवी रखे। गिरवी रखी गई चीज़ को क्या कहेंगे?
उत्तर – समर्थक ऋणाधार।

प्रश्न 26 (मध्यम). मेघा के उदाहरण में, अगर मेघा 10 साल में ऋण नहीं चुका पाती, तो बैंक क्या कर सकता है?
उत्तर – बैंक को अधिकार है कि वह समर्थक ऋणाधार (यानी घर) को बेचकर अपना पैसा वापस ले ले।

प्रश्न 27 (कठिन). आप एक ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसे अपनी बेटी की शादी के लिए तुरंत पैसों की ज़रूरत है, पर उसके पास कोई संपत्ति नहीं जिसे गिरवी रख सके। उसे बैंक से ऋण मिलने में क्या परेशानी आएगी और क्यों?
उत्तर – उसे बैंक से ऋण मिलने में बहुत परेशानी आएगी, क्योंकि बैंकों को ऋण देने के लिए समर्थक ऋणाधार (गिरवी रखने के लिए संपत्ति) की ज़रूरत होती है। बिना समर्थक ऋणाधार के बैंक ऋण नहीं देते, क्योंकि उन्हें अपने पैसे वापस मिलने की गारंटी चाहिए।

» विविध प्रकार के साख प्रबंध: औपचारिक और अनौपचारिक स्रोत

प्रश्न 28 (आसान). बैंक किस प्रकार के साख स्रोत का उदाहरण है?
उत्तर – औपचारिक स्रोत

प्रश्न 29 (आसान). साहूकार से लिया गया ऋण किस श्रेणी में आता है?
उत्तर – अनौपचारिक स्रोत

प्रश्न 30 (मध्यम). औपचारिक और अनौपचारिक साख स्रोतों में मुख्य अंतर क्या है?
उत्तर – औपचारिक स्रोतों पर सरकार (जैसे RBI) की निगरानी होती है और ब्याज दरें तय होती हैं, जबकि अनौपचारिक स्रोतों पर कोई निगरानी नहीं होती और ब्याज दरें ऊँची होती हैं।

प्रश्न 31 (कठिन). गरीब परिवारों के लिए अनौपचारिक साख स्रोत ज़्यादा नुकसानदेह क्यों होते हैं?
उत्तर – गरीब परिवारों के लिए अनौपचारिक स्रोत नुकसानदेह होते हैं क्योंकि यहाँ ब्याज दरें बहुत ऊँची होती हैं, जिससे कर्ज़ का बोझ बढ़ जाता है और वे अक्सर 'कर्ज़-जाल' में फँस जाते हैं। इससे उनकी आय का ज़्यादातर हिस्सा कर्ज़ चुकाने में ही चला जाता है।

» औपचारिक और अनौपचारिक साख की तुलना

प्रश्न 32 (आसान). कौन से स्रोत औपचारिक साख में आते हैं?
उत्तर – बैंक और सहकारी समितियाँ।

प्रश्न 33 (आसान). अनौपचारिक साख की ब्याज दरें कैसी होती हैं?
उत्तर – बहुत ऊँची और अनिश्चित।

प्रश्न 34 (मध्यम). गरीब परिवारों के लिए औपचारिक साख तक पहुँचना मुश्किल क्यों होता है?
उत्तर – दस्तावेज़ों की कमी, गिरवी रखने के लिए कुछ न होना, और बैंक की लंबी प्रक्रियाएँ।

प्रश्न 35 (कठिन). सरकार को ग्रामीण क्षेत्रों में औपचारिक साख के प्रसार के लिए क्या कदम उठाने चाहिए?
उत्तर – अधिक बैंक शाखाएँ खोलना, कर्ज़ प्रक्रिया को सरल बनाना, जागरूकता बढ़ाना और छोटे किसानों के लिए विशेष योजनाएँ लाना।

» निर्धनों के स्वयं सहायता समूह (SHG)

प्रश्न 36 (आसान). स्वयं सहायता समूह में आमतौर पर कितने सदस्य होते हैं?
उत्तर – 15-20 सदस्य।

प्रश्न 37 (आसान). स्वयं सहायता समूह मुख्य रूप से किन लोगों की मदद करता है?
उत्तर – निर्धन और खासकर महिलाओं की।

प्रश्न 38 (मध्यम). स्वयं सहायता समूह बैंकों से कर्ज़ कैसे प्राप्त करते हैं?
उत्तर – नियमित बचत करके और अपनी विश्वसनीयता साबित करके।

प्रश्न 39 (कठिन). स्वयं सहायता समूह ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी कम करने में कैसे मदद करते हैं?
उत्तर – वे सदस्यों को कम ब्याज पर कर्ज़ देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाते हैं, छोटे व्यवसाय शुरू करने में मदद करते हैं, और उन्हें साहूकारों के शोषण से बचाते हैं।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. एक मोची ने बहुत सुंदर जूते बनाए हैं और उसे अपनी बेटी के लिए स्कूल ड्रेस खरीदनी है। अगर पैसे न होते तो उसे क्या परेशानी होती?

› पहला चरण: मोची को एक ऐसे दुकानदार को खोजना पड़ता जो जूते खरीदने के बदले स्कूल ड्रेस बेच रहा हो।

› दूसरा चरण: यह बहुत मुश्किल होता कि दोनों की ज़रूरतें बिल्कुल एक जैसी हों, यानी मोची को जूते बेचने हों और दुकानदार को स्कूल ड्रेस बेचनी हो और जूते खरीदने हों।

› तीसरा चरण: इसे ही 'आवश्यकताओं का दोहरा संयोग' कहते हैं, जो वस्तु विनिमय में बहुत बड़ी रुकावट है।

› चौथा चरण: मुद्रा के होने से मोची अपने जूते बेचकर पैसे लेता है और फिर उन पैसों से अपनी पसंद की स्कूल ड्रेस खरीद लेता है, चाहे दुकानदार को जूते चाहिए हों या नहीं।

उत्तर – मुद्रा के बिना, मोची को आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या का सामना करना पड़ता, जिससे उसका व्यापार और खरीदारी बहुत कठिन हो जाती।

उदाहरण 2. मान लो, तुम्हें अपनी दोस्त से 500 रुपये की किताब खरीदनी है। तुम्हारी दोस्त तुम्हें किताब देने के बाद क्या चीज़ स्वीकार करेगी?

› पहला कदम: अपनी गुल्लक से 500 रुपये का एक नोट निकालो।

› दूसरा कदम: यह नोट, जो कि भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा जारी किया गया है, तुम्हारी दोस्त को दो।

› तीसरा कदम: तुम्हारी दोस्त इस 500 रुपये के नोट को सहर्ष स्वीकार करेगी, क्योंकि यह भारत सरकार द्वारा प्राधिकृत वैध मुद्रा है। वह इसे लेने से मना नहीं कर सकती।

उत्तर – तुम्हारी दोस्त 500 रुपये का नोट स्वीकार करेगी, क्योंकि यह करेंसी का एक आधुनिक रूप है और सरकार द्वारा वैध घोषित किया गया है।

उदाहरण 3. रीमा ने अपने बचत खाते में 15,000 रुपये जमा किए। कुछ दिनों बाद उसे 5,000 रुपये की ज़रूरत पड़ी, तो उसने एटीएम से 5,000 रुपये निकाल लिए। बैंक में उसकी यह जमा राशि क्या कहलाएगी और उसके खाते में अब कितने रुपये बचे हैं?

› पहला, रीमा ने अपनी अतिरिक्त नकदी बैंक में जमा की, तो यह 'निक्षेप' कहलाएगा।

› दूसरा, क्योंकि वह अपनी ज़रूरत पड़ने पर कभी भी इस पैसे को निकाल सकती है, इसलिए यह 'माँग जमा' कहलाएगा।

› तीसरा, उसने 15,000 रुपये में से 5,000 रुपये निकाल लिए।

› अब उसके खाते में बचे हुए रुपये = 15,000 - 5,000 = 10,000 रुपये।

उत्तर – रीमा की जमा राशि 'माँग जमा' कहलाएगी और उसके खाते में अब 10,000 रुपये बचे हैं।

उदाहरण 4. एम. सलीम अपने दोस्त प्रेम को 20,000 रुपये का भुगतान चैक द्वारा करना चाहते हैं। सलीम चैक कैसे लिखेंगे?

› सबसे पहले, चैक के ऊपर दाईं ओर आज की तारीख लिखेंगे, जैसे '26 / 10 / 2024'।
› फिर, 'Pay' या 'भुगतान करें' के आगे प्रेम का नाम लिखेंगे - 'प्रेम'।
› उसके ठीक नीचे वाले बॉक्स में या जगह पर, अंकों में रकम लिखेंगे - '₹20,000/-'।
› अब, 'Rupees' या 'रुपये' के आगे शब्दों में वही रकम लिखेंगे - 'बीस हज़ार रुपये मात्र'।
› आखिर में, चैक के नीचे दाईं ओर सलीम अपने हस्ताक्षर करेंगे।

उत्तर – इस तरह से चैक भरकर सलीम, प्रेम को 20,000 रुपये का भुगतान कर सकते हैं, और यह रकम सलीम के बैंक खाते से कटकर प्रेम के खाते में चली जाएगी।

उदाहरण 5. एक बैंक ने जमाकर्ताओं को 4% सालाना ब्याज दिया। उसी बैंक ने कर्जदारों को 9% सालाना ब्याज पर ऋण दिया। अगर बैंक ने ₹1,00,000 का ऋण दिया, तो बैंक को इस लेन-देन से कितनी आय हुई?

› सबसे पहले, हम देखेंगे कि बैंक ने कर्जदारों से कितना ब्याज लिया: ₹1,00,000 का 9% = (9/100) * 1,00,000 = ₹9,000.

› अब, हम यह मानेंगे कि बैंक ने यह ₹1,00,000 जमाकर्ताओं से ही लिया था और उन्हें 4% ब्याज दिया: ₹1,00,000 का 4% = (4/100) * 1,00,000 = ₹4,000.

› बैंक की आय, कर्जदारों से मिले ब्याज और जमाकर्ताओं को दिए गए ब्याज का अंतर है: ₹9,000 - ₹4,000.
› इसलिए, बैंक की कुल आय ₹5,000 हुई।

उत्तर – बैंक को इस लेन-देन से ₹5,000 की आय हुई।

उदाहरण 6. सलीम एक जूता बनाने वाला कारीगर है। उसे त्योहारों के मौसम में ज़्यादा जूते बनाने का आर्डर मिला। उसके पास कच्चा माल खरीदने और मज़दूरों को अग्रिम भुगतान करने के लिए पैसे नहीं थे। उसने एक बैंक से 10,000 रुपये का ऋण लिया। इस ऋण से उसने कच्चा माल खरीदा, मज़दूरों को भुगतान किया और समय पर जूते बनाकर बेच दिए। उसने 12,000 रुपये कमाए और ऋण आसानी से चुका दिया। बताओ, यह ऋण सलीम के लिए कैसा रहा और क्यों?

› स्टेप 1: सलीम को उत्पादन बढ़ाने के लिए कार्यशील पूँजी (Working Capital) की ज़रूरत थी।
› स्टेप 2: उसने बैंक से ऋण लेकर यह ज़रूरत पूरी की।
› स्टेप 3: ऋण की मदद से उसने उत्पादन समय पर पूरा किया और ज़्यादा जूते बेचकर लाभ कमाया।
› स्टेप 4: उसने कमाए हुए लाभ से ऋण चुका दिया।
› स्टेप 5: उसकी आय बढ़ गई और व्यापार भी।
› स्टेप 6: अतः, यह ऋण सलीम के लिए एक सकारात्मक भूमिका निभाता है।

उत्तर – यह ऋण सलीम के लिए बहुत सकारात्मक रहा क्योंकि इसने उसकी आय बढ़ाने और व्यापार को सफल बनाने में मदद की।

उदाहरण 7. मेघा ने घर खरीदने के लिए बैंक से 5 लाख रुपये का ऋण लिया। इस पर वार्षिक ब्याज दर 12% है और इसे 10 साल में मासिक किश्तों में लौटाना है। बैंक ने नए घर के सभी कागजात ऋणाधार के रूप में रख लिए। मेघा को अपनी नौकरी और वेतन संबंधी रिकॉर्ड भी दिखाने पड़े। बताइए इस ऋण की मुख्य शर्तें क्या हैं?

› पहला, ब्याज दर क्या है? यहाँ वार्षिक ब्याज दर 12% है।
› दूसरा, समर्थक ऋणाधार क्या है? बैंक ने नए घर के कागजात ऋणाधार के रूप में रखे हैं, मतलब घर ही गिरवी है।
› तीसरा, आवश्यक कागजात क्या हैं? मेघा को अपनी नौकरी और वेतन संबंधी रिकॉर्ड दिखाने पड़े।
› चौथा, भुगतान का तरीका क्या है? इसे 10 साल में मासिक किश्तों में लौटाना है।

उत्तर – इस ऋण की शर्तें हैं: 12% वार्षिक ब्याज दर, घर के कागजात समर्थक ऋणाधार के रूप में, नौकरी और वेतन संबंधी रिकॉर्ड आवश्यक कागजात, और 10 साल तक मासिक किश्तों में भुगतान का तरीका।

उदाहरण 8. सोनपुर गाँव में, श्यामलाल ने अपनी खेती के लिए एक सहकारी समिति से 5% वार्षिक ब्याज पर 50,000 रुपये का ऋण लिया। वहीं, उसी गाँव के रामू ने अपनी बेटी की शादी के लिए एक साहूकार से 24% वार्षिक ब्याज पर 50,000 रुपये का ऋण लिया। बताइए श्यामलाल और रामू ने किस प्रकार के साख स्रोत से ऋण लिया है?

› पहला, हम श्यामलाल के ऋण को देखेंगे। उसने सहकारी समिति से 5% वार्षिक ब्याज पर ऋण लिया है। सहकारी समितियाँ सरकार द्वारा नियंत्रित होती हैं और इनकी ब्याज दरें तय होती हैं।

› दूसरा, हम रामू के ऋण को देखेंगे। उसने एक साहूकार से 24% वार्षिक ब्याज पर ऋण लिया है। साहूकार व्यक्ति होते हैं और उनकी ब्याज दरें अक्सर बहुत ज़्यादा होती हैं और उन पर कोई सरकारी नियंत्रण नहीं होता।

› अब हम इनकी तुलना करेंगे। सहकारी समिति एक औपचारिक संस्था है, जबकि साहूकार एक अनौपचारिक ऋणदाता है।

उत्तर – श्यामलाल ने औपचारिक स्रोत (सहकारी समिति) से ऋण लिया, जबकि रामू ने अनौपचारिक स्रोत (साहूकार) से ऋण लिया।

उदाहरण 9. रमेश को अपनी बेटी की शादी के लिए 50,000 रुपये का कर्ज़ चाहिए। उसके पास दो विकल्प हैं: एक बैंक और दूसरा गाँव का एक बड़ा साहूकार। उसे कौन सा विकल्प चुनना चाहिए और क्यों?

› पहला कदम, रमेश को यह सोचना चाहिए कि बैंक से कर्ज़ लेने के क्या फायदे होंगे। बैंक में ब्याज दरें तय और कम होंगी। उसे चुकाने के लिए उचित समय मिलेगा और कोई अचानक दबाव नहीं होगा।

› दूसरा कदम, रमेश को साहूकार से कर्ज़ लेने के संभावित नुकसानों पर विचार करना चाहिए। साहूकार की ब्याज दरें बहुत ऊँची हो सकती हैं, जो बाद में चुकाना मुश्किल कर देंगी। साहूकार कर्ज़ चुकाने के लिए दबाव डाल सकता है और उसकी ज़मीन या संपत्ति भी गिरवी रखवा सकता है।

› तीसरा कदम, दोनों विकल्पों की तुलना करने के बाद, रमेश को यह तय करना चाहिए कि उसके लिए क्या बेहतर है, भले ही बैंक से कर्ज़ लेने में कुछ दस्तावेज़ों की ज़रूरत पड़े।

› चौथा कदम, रमेश को बैंक से ही कर्ज़ लेना चाहिए, क्योंकि यह उसकी आर्थिक सुरक्षा के लिए बेहतर होगा और उसे कर्ज़ के जाल में फँसने से बचाएगा।

उत्तर – रमेश को बैंक से कर्ज़ लेना चाहिए क्योंकि बैंक की ब्याज दरें कम और तय होती हैं, और कर्ज़ चुकाने की शर्तें भी उचित होती हैं, जिससे वह आर्थिक रूप से सुरक्षित रहेगा। साहूकार से कर्ज़ लेने पर उसे भारी ब्याज और अन्य कठोर शर्तों का सामना करना पड़ सकता है।

उदाहरण 10. एक स्वयं सहायता समूह में 20 सदस्य हैं। हर सदस्य हर महीने ₹100 बचाता है। अगर समूह ने 1 साल तक बचत की है, तो कुल कितनी राशि जमा हुई होगी? यदि समूह इस जमा राशि में से किसी सदस्य को ₹2000 का कर्ज़ 6 महीने के लिए देता है, तो उसे कितने रुपये ब्याज मिलेंगे यदि ब्याज दर 2% प्रति माह हो?

› स्टेप 1: एक सदस्य की 1 साल की बचत = ₹100/माह × 12 माह = ₹1200

› स्टेप 2: समूह की कुल बचत (20 सदस्यों की) = ₹1200 × 20 = ₹24000

› स्टेप 3: कर्ज़ पर मासिक ब्याज = ₹2000 का 2% = (2/100) × ₹2000 = ₹40

› स्टेप 4: 6 महीने का कुल ब्याज = ₹40/माह × 6 माह = ₹240

उत्तर – समूह में कुल ₹24000 जमा हुए होंगे, और सदस्य को ₹2000 के कर्ज़ पर 6 महीने में ₹240 ब्याज देना होगा।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं में 'मुद्रा क्या है?' या 'वस्तु विनिमय प्रणाली की समस्याएँ' जैसे प्रश्नों के लिए महत्वपूर्ण है। परिभाषा और उदाहरण के साथ स्पष्टीकरण दें।

• यह प्रश्न 'मुद्रा के आधुनिक रूपों की विशेषताएँ' के रूप में बोर्ड परीक्षा में सीधा-सीधा आ सकता है, तो इसके मुख्य बिंदु याद रखना।

• चैक से जुड़े सवाल, खासकर इसके फायदे और यह कैसे काम करता है, बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछे जाते हैं। उदाहरण के साथ इसका पूरा प्रोसेस अच्छे से समझना।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर 'बैंकों की आय का स्रोत' या 'बैंक कैसे काम करते हैं' जैसे प्रश्नों में पूछी जाती है। ब्याज के अंतर वाले भाग पर विशेष ध्यान दें।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'सकारात्मक' और 'नकारात्मक' प्रभावों को उदाहरणों के साथ अच्छी तरह समझें, खास कर 'ऋण जाल' (debt trap) की स्थिति को परिभाषित करना सीखें।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है। 'ऋण की शर्तें' क्या हैं और इसके विभिन्न घटकों को उदाहरणों सहित समझाइए, ऐसे प्रश्न 3-5 अंकों में आ सकते हैं। मेघा वाले उदाहरण को ध्यान से पढ़ना, वो बहुत ज़रूरी है।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'औपचारिक और अनौपचारिक साख स्रोतों के बीच अंतर' पर आधारित प्रश्न सीधे तौर पर पूछे जा सकते हैं, इसलिए दोनों के बीच के मुख्य बिंदुओं और RBI की भूमिका को अच्छे से याद रखना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर सीधा प्रश्न आता है कि औपचारिक और अनौपचारिक साख में अंतर स्पष्ट करें, या गरीबों पर इनके प्रभावों की चर्चा करें।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर स्वयं सहायता समूहों के कार्यप्रणाली और उनके लाभ पर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं। इसे अच्छे से समझकर जाना।

एक नज़र में रिवीज़न

› मुद्रा विनिमय का माध्यम है; दोहरे संयोग की समस्या को खत्म करती है।
› करेंसी = कागज़/सिक्के + सरकार द्वारा प्राधिकृत (RBI जारी करता है)।
› चैक: नकद रहित भुगतान, एक खाते से दूसरे में धन हस्तांतरण।
› बैंक जमाकर्ता व कर्जदार के बीच मध्यस्थ, ब्याज का अंतर आय है।
› ऋण के सकारात्मक (उत्पादन वृद्धि) और नकारात्मक (ऋण जाल) प्रभाव।
› ऋण की शर्तें: ब्याज दर, गिरवी, कागजात, भुगतान तरीका।
› साख के दो स्रोत: औपचारिक (बैंक, सहकारी) और अनौपचारिक (साहूकार, दोस्त)।
› औपचारिक: कम ब्याज, सुरक्षित। अनौपचारिक: उच्च ब्याज, जोखिमपूर्ण।
› निर्धनों के SHG: 15-20 सदस्य, नियमित बचत, आसान शर्तों पर कर्ज़, बैंक लिंक।